आज का पुरुषार्थ by Suraj Bhai

Date: 18 March 2022 **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – "आज ईश्वरीय रंग में रंगने का ऐसा पुरुषार्थ करे कि यह रंग कभी न उतरे "

आज रंगो का त्यौहार है। इस दिन की आप सभी को बहुत-बहुत बधाईयाँ।

भारत तो है ही त्यौहारों का देश। यहाँ हर समय **खुशियाँ** मनाई जाती है।

लेकिन हमें अपने जीवन को ऐसा सेट करना है कि हम सदाकाल के लिए खुशियाँ मनाते रहे। हमारे **मन मंदिर** में सदा ही ढोल बजते रहे। गीत चलते रहे।

इसके लिए स्वयं को **ईश्वरीय रंग** से रंगना है। उसी के यादगार है आज का दिन कि सभी लोग एक दुसरे पर रंग डालते है।

सत्य तो यह है कि **भगवान** ने आकर जब सत्य ज्ञान दिया था तो वो सभी ने एक दुसरे को सुनाया था। उनका कल्याण किया था। उसके यादगार में यह रंग डाले जाते है।

उस **ज्ञान की रंग** में सभी आत्मायें रंग गई थी। बहुत सुखी बहुत प्रसन्न हो गई थी। हम सब भी ईश्वरीय ज्ञान की रंगों में स्वयं को रग दे। दूसरों को भी रंगते चले।

पिचकारी से भी रंग डाली जाती है। यह इसी बात का यादगार है कि, जब भगवान यहाँ आकर राजयोग सिखाते है तो आत्मायें बहुत शक्तिशाली बन जाती है। और मस्तक से जहाँ आत्माओं का निवास है शक्तियों की किरणें चारों ओर फैलती है।

तो मस्तक से जैसे शक्तिशाली रंग बिरंगी **पिचकारी** दुसरों पर पड़ती रहती है। शाम की टाईम सब पुनः मनोरंजन करते है। यह बात ईश्वरीय नशे की है। **ईश्वरीय** खुमारी की है।

जिन्हें भगवान मिल गया है, जिन्हें उनका साथ मिल गया है भगवान जिनका खुदा दोस्त बन गया है भगवान ने स्वयं जिनके जीवन का श्रृंगार किया है वही ईस रूहानी नशे में रह सकते है।

हम देवकुल की महान आत्मायें है। तो इस रूहानी नशे में हम रहे। **मिठाईयाँ** भी खाये। अर्थात **सुईट बने, सॉफ्ट बने, नम्रचित्त बने।**

अपने बोल को बहुत **मीठा** बनाये। ताकि हमारे बोल दुसरों की कष्ट हर सके। तो इसीतरह आज रंग का दिवस मनाये। अपने को भी ईश्वरीय रंग में ऐसा रंग दे कि यह रंग कभी उतरे नहीं।

निरंतर और गहरा होते चले यह रंग। और **मस्तक से शक्तियों की पिचकारी सब पर पड़ती रहे**। जिन्होंने ने **राजयोग** सीखें है वो अच्छी तरह प्रैक्टिस करे।

दुसरे को **आत्मा** जान उनमें **सर्व शक्तियों की पिचकारी** डालते चले। सब एक दुसरे के गले भी मिलते है इस दिन।

वास्तव में इस समय संसार में जो नफरत का दौर चल रहा है, ईर्ष्या-द्वेष-क्रोध-मनोविकारों में आत्मा जैसे तपती जा रही है, उससे अपने को शीतल करने के लिए हमें आत्मिक भाव अपनाना है।

सभी आत्मायें है। तो हमें **दृष्टि** बदलनी है। यह हिन्दु है, यह मुसलमान है, यह छोटी जाती का है और यह बड़े जाती का, यह बूढ़ा है यह जवान है, यह नर है यह नारी है .... इन सबसे ऊपर उठकर रूहानी दृष्टि।

सभी आत्मायें एक ही भगवान के संतान, एक ही खुदा के बन्दे है। ऐसे ही यदि हम याद करेंगे तो आपस में बहुत ज्यादा प्यार रहेगा।

गले मिल तो लेते है लेकिन, दिल तो नहीं मिलते है बहुतों के। ऐसे अभ्यास करने से दिल भी मिल जायेंगे। बहुत प्यार हो जायेगा। और जब प्यार हो जाता है तो मनुष्य की समस्यायें बहुत कम रह जाती है।

जिन परिवारों में, जिन संगठनों में प्यार और अपनापन है वहाँ एकता बहुत अच्छी रहती है।

तो आईये इसी तरह हम सभी इस दिन को मनाये। इस दिन की पुनः आप सभी को बहुत-बहुत बधाईयाँ हो। रंग दे अपने को। ऐसा रंग दे कि यह रंग कभी न उतरे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org